Volume : 1 | Issue : 4 | Sep 2012 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper | Literature

दृक श्रव्य माध्यमों में हिन्दी : दषा एवं दिषा

Druk Shravya Madhyamo me Hindi : Dash avam Disha

Dr. P.V. Mahalinge षेठ एल. यु. और सर एम. व्ही महाविद्यालय अन्धेरी पूर्व मुंबई 69

जनसंचार के बहुत सारे माध्यम देखने को मिलते है इसलिए हामने इसे प्रमुख दो भागों में विभाजित किया है एक परम्परागत माध्यम और दूसरा आधुनिक माध्यम। आधुनिक संचार माध्यमों में डाक प्रणाली, प्रिन्ट माध्यम और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के श्रव्य और दृष्य श्रव्य ऐसे दो भाग किए जाते है। यहाँ हम दृक श्रव्य माध्यमों के संदर्भ में जानने की कोषिष की है इनमें भी मैने केवल दो माध्यम चुने है एक सिनेमा और दूसरा टेलीवीजन।

दृष्य श्रव्य माध्यमों में प्रमुख है फिल्म, टेलीविजन, वीडियो, इंटरनेट भ्रमनध्वनि आदि है। मीडिया विष्व के लगभग हर घर में पहुचा हुआ है। एक दिन भी इन माध्यमों के बिना रहना हमारे लिए मुष्किल हो रहा है। क्योंकि हाम रोज घटित होनेवाली घटनाओं से परिचित होना चाहते है। इसलिए यह माध्यम बहुत ही लोकप्रिय हुए है। इन में ध्वनि के साथ दृष्यों या चित्रों का भी समावेष होता है। इसलिए श्रोताओं, पाठकों या दर्षकों को कहीं गई बात या विचार आसानी से समझ में आ जाती है। मतलब सीधा आमने सामने देखने से इसका प्रभाव अन्य संचार माध्यमों की तुलना में बहुत गहरा पडता है और पाठक, श्रोता या दर्षक इसे आसानी से ग्रहण कर सकते है। यह माध्यम मूलतः मनोरंजनपरक है पर इस मनोरंजन के द्वारा ही समाज में एक तरह का संदेष पहुंचाने का कार्य भी करते रहे है। एक ओर मनोरंजन और दूसरी ओर एक विषिष्ट संदेष पहुंचाकर समाज जाग्रति का काम भी किया है। सुंदर और आकर्शक दृष्यों का चित्रिकरण, प्रभावपूर्ण ध्वनियाँ, सुमधुर संगीत और गति, रोचकता और कल्पनाषीलता देखनेवालों को बांधे रखती है। इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र में होते आविश्कारों के कारण नये-नये प्रयोग इन्हें और आधिक सुविधाजनक और कम खर्चीला बना रहे है। ''हम कह सकते है कि फिल्मों में हिन्दी की दषा अच्छी ही है जो निरंतर भाशा बदल रही है वह हमारे सम्मुख आ रही है।'' इसी कारण ये माध्यम आधिक लोकप्रिय हो रहे है।

सिनेमा :-

'सिनेमा' इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार के दृष्य श्रव्य माध्यमों में सबसे प्रमुख एवं लोकप्रिय माध्यम रहा है। सिनेमा यह षब्द हमारे जनजीवन के साथ इतना घुल मिल गया है कि इसे सही अर्थों में परिभाशित करना मुष्किल हो गया है। असल में सिनेमा किसे कहते है ? टेलीविजन के पहले हम जो थिएटर में देखते थे वह सिनेमा है? या थिएटर में देखते है वह भी और जो कुछ टेलीविजन पर देखते है वह भी सिनेमा है? असल में इसे अनेक षब्दों से संबोधित किया जाता रहा है। जैसे सिनेमा, फिल्म, टॉकिज, थिएटर, मूवी इस तरह के अनेक षब्दों से जानाजाता है। ये षब्द एक ही अर्थ को दर्षाते है क्रिष्चियन मैट्ज ने सिनेमा कि परिभाशा इस प्रकार दी है। ''फिल्म निर्माण, फिल्म वितरण, फिल्म प्रदर्षन और फिल्म देखने की समग्र प्रक्रिया को सिनेमा से अभिहित किया जाता है।''१ मतलब स्पश्ट है कि फिल्म देखने की समग्र प्रक्रिया दर्षक के साथ घटित होती है दर्षक समग्रता में उसे अनुभव करता है और फिल्म की पूरी प्रक्रिया से अनभिज्ञ रहता है। फिल्म के अविश्कार का संबंध फोटोग्राफी के साथ जुडा हुआ है। सन १८२० में 'आप्टिकल खिलौनों' के रुप में इसकी नींव रखी जा चुकी थी। लेकिन ये स्थिर चित्र थे। इनमें गति का प्रभाव १८७८ में एडवर्ड मुयाब्रिन ने उत्पन्न किया इनके पष्चात ल्यूमियरे बंधुओं ने फिल्म को व्यवसाय के रुप में स्थापित किया। १८९५ में उन्होंने पेरिस में पहली फिल्म प्रदर्षित की ''जब कि जार्नेस मेलिस वह पहला व्यक्ति था, जिसने सन् १८९७ में पेरिस के निकट दुनिया का पहला स्टूडियो स्थापित किया था। इस स्टूडियों का नाम था -'पैथे गारमाप्टे' ।''२ अमरिका में विलकाम्से ने हालीवुड को जन्म दिया आगे चलकर फिल्मों का इतिहास बहुत तेजी से बदलने लगा और आज भी बदल रहा है।

भारत में फिल्म का पहला षो ७ जुलाई १९९६ को हुआ था। यह षो अगस्त लुमिरे और लुईस लुमरे ने किया था। ''दादासाहब फालके भारतीय सिनेमा के षलाक पुरुश हैं। इन्होंने 'राजा हारिष्चन्द्र' नामक पहली फीचर फिल्म बनवाई थी जिसका प्रदर्षन ३ मई, १९१३ को हुआ लेकिन यह मुक फिल्म थी भारत में पहली बोलती फिल्म थी 'आलम आरा' यह फिल्म भी १९१३ में प्रदर्षित हुई थी। धीरे-धीरे फिल्में बनने का सिलसिला षुरु हो गया। सन् १९३२ में 'इन्द्रसभा' नामक फिल्म बनी, जिसने अपार लोकप्रियता हासिल की इस फिल्म में ७० गाने थें।''३

फिल्मों में हिन्दी भाशा:- प्रसिद्ध समीक्षक डॉ. अजय तिवारी ने कहा कि ''दुनिया बदल रही है , तो भाशा भी बदलेगी''४ आज जो हिन्दी भाशा फिल्मों और गीतों में प्रयुक्त हो रही है उसपर नजर डाले तो खुदबखुद पता हो जाएगा कि आज हिन्दी की स्थिति क्या है? जैसे १. डॉन १९७८ दिग्दर्षक चंद्र थोरात ''अरे दिवानों मुझे पहचानों मैं हूँ डॉन'' २. राम लखन- १९८९ दिग्दर्षक सुभाश घाई ए जी ओ जी लो जी सुनो जी कहता हूँ मैं जो वो तुम भी करो जी वन टू का फोर फोर टू का वन, माय नेम इज लखन।'' ३. जान तेरे नाम १९९२ दिग्दर्षक सतिष कौषिक ''फर्ट टाईम देखा तो हम खे गया, सेकंड टाईम में लव हो गया अख्खा इंडिया जानता हैं मैं तुम पे मरता हूँ।'' ४. बॉडिगार्ड २९ अगस्त २०११ दिग्दर्षक सिध्दिक मलिक ''आओ जा बाओजी दिल को दिल मिलाओ जी आ गया है देखो बॉडिगार्ड। सबसे हॉट सबसे स्मार्ट, जब बुराई उसकी फाट आ गया है देखो बॉडिगार्ड।'' इन उदाहरणों से स्पश्ट हो जात है कि फिल्मी गीतों में अब हिन्दी भाशा का हिग्लिषिकरण हो गया है। और आज जिस गाने ने पुरे भारत भर धुम मचाई वह गाना ''व्हाय दिस कोलवरी डी'' इस गाने से पता चलात है कि केवल हिन्दी का ही हिग्लिषिकरण नहीं हुआ है बल्कि भारत की सभी भाशाओं में इसका प्रभाव देख सकते है। हिन्दी की लोक प्रियता बढने के अनेक कारण है पर उनमें अंग्रेजी फिल्मों का हिन्दी में अनुवादित होने के कारण भी हिन्दी का विकास होताहुआ नजर आता है। हम सब जानते है हि पिछले दिनों में अर्थात् २००१ में 'द ममी रिटर्न्स' 'स्पैडर मैन' 'हॅरी पॉटर' जैसी फिल्मों ने भारत भर धुम मचाई थी। इसी तरह हिन्दी फिल्मों के अंग्रेजी रुपांतरण के कारण भारतीय फिल्में विदेषों में कॉफि प्रसिद्ध हो रहे है। अब हमे इसी भाशा को स्विकारने की जरुरत है जो जनता द्वारा प्रंयुक्त हो रही है।

टेलीवीजन :-

टेलीवीजन का हमें अलग से परिचय देने की आवष्यकता नहीं है। इसलिए मै यहाँ इसके विकास की बात नहीं करुंगा। आज टेलीविजन मनोरंजन, षिक्षा प्रसारण, सूचना के साथ जनसंचार का प्रमुख माध्यम बना हुआ है। यह एक कुषल अभिनेता और एक बहुरुपी की तरह अनेक भूमिकाएँ निभाता है। यह आज हमारे त्योहार, उत्सव संस्कृति लोक कलाएँ, और लोक गीतों के साथ-साथ हमारे मानसिक और षारिरीक स्वास्थ्य के संवर्धन, पालन पोशण में माँ-बाप की भूमिका निभा रहा है। ज्ञान संवर्धन में वह एक गुरु की भूमिका निभा रहा है। हिन्दी भाशा को एक व्यापक धरातल पर प्रस्तुत करने में राश्ट्रीय स्तर पर विभिन्न भूप्रदेषों, विभिन्न भाशा भाशियों और विभिन्न जाति-धर्मियों तक ले जाने में भारत के कोने कोने में बसे सुदूर में फैले खेतों खलिहानों नदियों पर्वतों, रिगिस्तानों अंचलों, गाँवो कस्बों तथा नगरों महानगरों तक इस माध्यम ने मनोरंजन के लिए हो या लोक कल्याण के लिए हो या व्यापार की दृश्टि से ही क्यों न हो पर इतना निष्चित हुआ है कि इन्हों ने हिन्दी भाशा के विकास और वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

षिक्षा के क्षेत्र में भी हिन्दी में अपार संभावनाएँ हैं। उल्लेखवीय है कि विष्व के लगभग १६० विष्वविद्यालयों में किसी न किसी स्तर पर हिन्दी पढाई जाती है। इन पठ्यक्रमों को संचालित करने के लिए अनेक हिन्दी षिक्षकों की आवष्यकता है। और बनी रहेगी। ''भारतीय वंष के राश्ट्रो में प्रसिद्ध मॉरिषस के संदर्भ में प्राप्त एक आंकडे के अनुसार सन १९९८ में सरकारी प्रथमिक हिन्दी विद्यालयों की संख्या २५४ थी जिसमें ६९० अध्यापक, ११ निरीक्षक और ४९००० विद्यार्थी थें।''५

सूचना का उत्तरदायित्व टेलीवीजन द्वारा निभाया जा रहा है। इनमें समाचार बेचने की प्रतिस्पध र्ा बहुत ज्यादा है। दूरदर्षन, जी टी. वी. स्टार टी. वी. द्वारा न्युज चैनल, स्पोर्ट चैनल के कार्टून चैनल, डिस्कवरी चैनल ऐसे अनेक ज्ञान वर्धक चैनल दिन के २४ घंटे प्रसारीत हो रहे है। अंग्रेजी की अपेक्षा हिन्दी की प्रमुखता का उल्लेख करते हुए डॉ. वीणा श्रीवास्तव ने एक सर्वक्षण रिपोर्ट प्रस्तुत की है उनके अनुसार- ''एक सर्वक्षण के अनुसार अंग्रेजी समाचार चैनलों को सामानतः ३१ मिनट ते और हिन्दी सामाचार चैनलों को २९२ मिनट तक सुना जाता है।''६

विज्ञापन -इस पर कई तरह के देषी और विदेषी चैनल दिनरात २४ घंटे चलते रहते है। इन चैनलों को भारत एक बड़ा बाजार दिखई देता है। जहाँ के बहुसंख्यंक लोग हिन्दी बोलते है इसलिए हिन्दी का महत्व व्यापार के क्षेत्र में बड़ रहा है। विज्ञापन की भाशा उपभोक्ता के लिए सरल है। इसमें गागर में सागर भरने की क्षमता है। इसलिए आज वस्तु से संबंधित नये मुहवारों का निर्माण हो रहा है मतलब नई भाशा बन रही है। नये बनने वाले षब्द अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी के है अर्थात इस भाशा को हिग्लीष के नाम से जाना जाने लगा है। जैसे - 'ठंडा मतलब कोका कोला' 'देष की धडकन हिरो होंडा'

इस तरह के विज्ञापनों में हिन्दी और अंग्रेजी का प्रयोग धडल्ले से हो रहा है। परिणाम स्वरुप भाशा बिगड रही है ऐसा कुछ विद्ववानों का मानना है पर मुझे लगता है कि इसके माध्यम से हिन्दी के षब्दों का संग्रह बढ़ रहा है। नई भाशा बन रही है। यही भाशा के जीवित होने का लक्षण है तो फिर ऐसी भाशा को किसी भी नाम से संबोधित करने से और कोई भी नाम रखने से कोई फर्क नही पडेगा। आज किसी भी व्यक्ति को षुद्ध हिन्दी बोलना और सुनना भी मुषिल हो जायेगा। क्योंकि षिक्षित और आषिक्षित दोनों भी टेलीवीजन के सामने बैठकर एक ही कार्यक्रम देखते है और दोनों को भी अच्छि तरह से समझ में आनेवाली भाश बोली जाती है। आज जो टेलीवीजन पर धारावाहिक, टेलीफिल्में, डाक्यूमेंट्रिया, रियलीटी षो आदि का अपना बाजार है जिनकी टी. आर. पी. देखकर कंपनियाँ प्रायोजक के रुप में अपने उत्पाद की मार्केटिंग कर रही है। आज जो धारावाहिक टी. वी. पर चल रहे है वे 'परवरिष', पवित्र रिष्ता', अफसर बिटिया' जैसे कार्याक्रमों ने लोकप्रियता हासिल की है। इसी कारण इन की टी. आर. पी. भी बढ़ गई है। यही चैनल भाशा का विकास भी कर रहे है और साथ ही इसके साथ जुडे कई लोगों की रोजी-रोटी इस उद्योग से चल रही है। इसलिए हम कह सकते है कि हिन्दी की स्थिति आज तो ठिक ही लगती है और दषा के संदर्भ में कहे तो हिन्दी में कुछ कमियाँ भी है और उसमें काम करने की जरुरत है। आनेवाले दिनों में इसके बारे में भी काम होगा ऐसी उम्मीद रखी जा सकती है।

REFERENCES

१. भारतीय मीडिया: अंतरंग पहचान संपा. डॉ. स्मिता मिश्र पृ. १५२ २. मीडिया लेखन सुमित मोहन पृ. ७३ ३. वही पृ. ७३ ४. कथादेष पृ. ८५ मार्च २००७ ५. अनभै पृ. पत्रिका जनवरी मार्च २०१० पृ. २५ ६. वही. पृ. २२